

## IV. मौद्रिक और चलनिधि की स्थिति

2010-11 की तीसरी तिमाही के दौरान की कम चलनिधि की स्थिति में चौथी तिमाही के दौरान कुछ सुधार हुआ जिसका मुख्य कारण ढांचागत और अवरोधी दबाव के कारकों का कम हो जाना था। कम चलनिधि की स्थिति से मौद्रिक अंतरण बढ़ गया जो कि बैंकों की उच्च जमा राशि और उधार दरों में दिखा और साथ ही जमा राशि की वृद्धि बढ़ गयी और ऋण वृद्धि में कुछ कमी आयी। किंतु मौद्रिक नीति का मुद्रास्फीति विरोधी बल वृद्धि की गति से निरंतर अप्रभावित रहा।

### मौद्रिक स्थिति मुद्रास्फीति विरोधी रुझान के अनुरूप रही

IV.1 2010-11 के दौरान मौद्रिक और चलनिधि की स्थिति मुद्रास्फीति विरोधी रुझान के अनुरूप रही। रिजर्व बैंक का मौद्रिक नीतिगत रुझान बढ़ते स्फीतिकारी दबाव के प्रतिसाद में अक्टूबर 2009 से कड़ाई का रहा है। अब तक की चरणबद्ध नीतिगत कार्रवाई वृद्धि में बाधक नहीं रही है। रिजर्व बैंक ने फरवरी 2010 से अब तक आरक्षित नकदी निधि अनुपात में 100 आधार अंक, रिजर्व रिपो दर में 250 आधार अंक और रिपो दर में 200 आधार अंक की वृद्धि की है। चलनिधि समायोजन सुविधा में अवशोषण बंद करके आपूर्ति शुरू करने से फरवरी 2010 से नीतिगत दरों में 350 आधार अंकों की वृद्धि हुई है (सारणी IV.1)।

IV.2 2010-11 के दौरान रिजर्व बैंक ने प्रभावी मौद्रिक अंतरण के लिए आदर्श के रूप में बैंकों की निवल मांग और मीयादी देयताओं के  $\pm 1$  प्रतिशत का निवल चलनिधि स्तर निर्धारित किया। 2010-11 की ति4 में कम चलनिधि की स्थिति की निरंतरता से मौद्रिक नीति अंतरण और बढ़ गया। किंतु मुद्रास्फीति निरंतर उच्च बनी रही। रिजर्व बैंक ने एक ओर बाजारों को सुगमता से कार्यरत रखने के लिए पर्याप्त चलनिधि सुनिश्चित करने और दूसरी ओर मुद्रास्फीति विरोधी मौद्रिक नीतिगत रुझान बनाये रखने के बीच कठिन संतुलन बनाये रखने के लिए कड़े प्रयास किये।

### सारणी IV.1: भारत में प्रमुख पॉलिसी दरों में परिवर्तन

(प्रतिशत)			
से प्रभावी	रिजर्व रिपो दर	रिपो दर	आरक्षित नकदी अनुपात
1	2	3	4
11 अक्टूबर 2008	6.00	9.00	6.50 (-2.50)
20 अक्टूबर 2008	6.00	8.00 (-1.00)	6.50
25 अक्टूबर 2008	6.00	8.00	6.00 (-0.50)
3 नवंबर 2008	6.00	7.50 (-0.50)	6.00
8 नवंबर 2008	6.00	7.50	5.50 (-0.50)
8 दिसंबर 2008	5.00 (-1.00)	6.50 (-1.00)	5.50
5 जनवरी 2009	4.00 (-1.00)	5.50 (-1.00)	5.50
17 जनवरी 2009	4.00	5.50	5.00 (-0.50)
4 मार्च 2009	3.50 (-0.50)	5.00 (-0.50)	5.00
21 अप्रैल 2009	3.25 (-0.25)	4.75 (-0.25)	5.00
13 फरवरी 2010	3.25	4.75	5.50 (+0.50)
27 फरवरी 2010	3.25	4.75	5.75 (+0.25)
19 मार्च 2010	3.50 (+0.25)	5.00 (+0.25)	5.75
20 अप्रैल 2010	3.75 (+0.25)	5.25 (+0.25)	5.75
24 अप्रैल 2010	3.75	5.25	6.00 (+0.25)
2 जुलाई 2010	4.00 (+0.25)	5.50 (+0.25)	6.00
27 जुलाई 2010	4.50 (+0.50)	5.75 (+0.25)	6.00
16 सितंबर 2010	5.00 (+0.50)	6.00 (+0.25)	6.00
2 नवंबर 2010	5.25 (+0.25)	6.25 (+0.25)	6.00
25 जनवरी 2011	5.50 (+0.25)	6.50 (+0.25)	6.00
17 मार्च 2011	5.75 (+0.25)	6.75 (+0.25)	6.00

टिप्पणी: 1. रिजर्व रिपो चलनिधि का अवशोषण दर्शाता है और रिपो चलनिधि की आपूर्ति दर्शाता है।  
2. कोष्ठकों में दिये गये आंकड़े प्रतिशत अंकों में पॉलिसी दरों में परिवर्तन दर्शाते हैं।

### ढांचागत और अवरोधी चलनिधि प्रेरक कम हो जाने से चलनिधि की स्थिति अच्छी हो गयी

IV.3 कड़ाई के महत्वपूर्ण चरण के बाद 2010-11 की चौथी तिमाही के दौरान कम चलनिधि की स्थिति के ढांचागत और अवरोधी प्रेरक कम हो गये (सारणी IV.2)। चलनिधि की स्थिति मई 2010 के अंत से कमी की स्थिति में चली गयी जिसका कारण रिजर्व बैंक में रखे सरकारी शेष में व्यापक वृद्धि होना था (जो कि 3जी /बीडब्ल्यूए नीलामी और तिमाही अग्रिम कर भुगतान की पहली किस्त से उभरा था)। रिजर्व बैंक ने चलनिधि का दबाव कम करने के लिए अनेक नीतिगत उपाय किये, नामतः चलनिधि समायोजन सुविधा के तहत अनुसूचित वाणिज्य बैंकों को अतिरिक्त चलनिधि सहायता लेने की अनुमति देना और द्वितीय चलनिधि समायोजन सुविधा को दैनिक आधार पर आयोजित करना।

**सारणी IV.2: चलनिधि स्थिति**

(करोड़ ₹)

अंतिम शुक्रवार को बकाया	एलएएफ	एमएसएस	केन्द्र का बकाया@	कुल
1	2	3	4	5=(2+3+4)
<b>2009</b>				
अप्रैल	1,08,430	70,216	-40,412	1,38,234
मई	1,10,685	39,890	-6,114	1,44,461
जून	1,31,505	22,890	12,837	1,67,232
जुलाई	1,39,690	21,063	26,440	1,87,193
अगस्त	1,53,795	18,773	45,127	2,17,695
सितंबर	1,06,115	18,773	80,775	2,05,663
अक्तूबर	84,450	18,773	69,391	1,72,614
नवंबर	94,070	18,773	58,460	1,71,303
दिसंबर	19,785	18,773	1,03,438	1,41,996
<b>2010</b>				
जनवरी	88,290	7,737	54,111	1,50,138
फरवरी	47,430	7,737	33,834	89,001
मार्च*	990	2,737	18,182	21,909
अप्रैल	35,720	2,737	-28,868	9,589
मई	6,215	317	-7,531	-999
जून	-74,795	317	76,431	1,953
जुलाई	1,775	0	16,688	18,463
अगस्त	11,815	0	20,054	31,869
सितंबर	-30,250	0	65,477	35,227
अक्तूबर	-1,17,660	0	86,459	-31,201
नवंबर	-1,03,090	0	93,425	-9,665
दिसंबर	-1,13,415	0	1,44,437	31,022
<b>2011</b>				
जनवरी	-76,730	0	1,18,371	41,641
फरवरी	-72,005	0	77,397	5,392
मार्च*	-1,06,005	0	16,416	-89,589
अप्रैल 22	-16,405	0	-48,401	-64,806

@ : अतिरिक्त के मामले में रिजर्व बैंक के पास न्यूनतम नकदी बकाया शामिल नहीं है।

\* : 31 मार्च से संबंधित आंकड़े।

Note: 1. कॉलम 2 ऋण का चिह्न एलएएफ के माध्यम से चलनिधि की आपूर्ति दर्शाता है।  
2. कॉलम 4 का ऋण का चिह्न केन्द्र सरकार द्वारा उपयोग किए गए डब्ल्यूएमए/ओडी को दर्शाता है।

IV.4 चलनिधि की स्थिति में अगस्त 2010 में सुधार हुआ जिसका मुख्य कारण सार्वजनिक ऋण की व्यापक मात्रा में समय पूर्व चुकौती था। अधिदेश चलनिधि की अल्प अवधि के बाद चलनिधि समायोजन सुविधा सितंबर 2010 के दूसरे सप्ताह से पुनः घाटे की स्थिति में आ गयी जिसका कारण तिमाही अग्रिम कर भुगतान था। जमाराशि और ऋण वृद्धि के बीच असंतुलन और साथ ही मुद्रा की उच्च मांग से चलनिधि पर दबाव बढ़ गया। तीसरी तिमाही के दौरान रिजर्व बैंक ने चलनिधि पर दबाव कम करने के लिए खुले बाजार के परिचालन क्रय और अन्य उपाय किये।

IV.5 चलनिधि की स्थिति में 2010-11 की अंतिम तिमाही के दौरान सुधार हुआ जिसका कारण सरकारी व्यय में तेजी आना और रिजर्व बैंक द्वारा दिसंबर मध्य से किये गये खुले बाजार के परिचालन थे (सारणी IV.3)। 2010-11 के दौरान रिजर्व बैंक ने खुले बाजार के परिचालन के तहत लगभग 67,000 करोड़ रुपये की सरकारी प्रतिभूति का क्रय किया। मार्च 2011 के मध्य में तिमाही अग्रिम कर भुगतान के बावजूद, जिसने अस्थायी कड़ी स्थिति में मदद की, चलनिधि की कमी नियंत्रण में रही जिसका कारण माह के दौरान अधिक सरकारी व्यय होना था।

**सारणी IV.3: भारतीय रिजर्व बैंक के चलनिधि प्रबंधन परिचालन**

(करोड़ ₹)

मद	2009-10				2010-11			
	ति.1	ति.2	ति.3	ति.4	ति.1	ति.2	ति.3	ति.4
1	2	3	4	5	6	7	8	9
<b>अ. चलनिधि के प्रेरक (1+2+3+4)</b>	<b>-45,110</b>	<b>-44,513</b>	<b>-66,785</b>	<b>55,055</b>	<b>-1,05,124</b>	<b>26,981</b>	<b>-1,12,597</b>	<b>73,540</b>
1. प्राधिकृत डीलरों से भा.रि.बैं. की निवल खरीद	-15,874	2,523	436	910	816	751	5,991	-
2. जनता के पास मुद्रा	-18,690	-9,020	-43,224	-31,109	-58,757	180	-42,613	-45,487
3. क. भा.रि.बैंक के पास केन्द्र की अतिरिक्त राशियां	3,382	-67,938	-22,663	85,257	-58,249	10,953	-78,960	1,28,021
3. ख. डब्ल्यूएमए और ओडी	-	-	-	-	-	-	-	-
4. अन्य (अवशिष्ट)	-13,928	29,922	-1,334	-3	-8,994	15,097	2,985	-8,994
<b>आ. चलनिधि का प्रबंधन (5+6+7+8)</b>	<b>-21,674</b>	<b>62,376</b>	<b>89,870</b>	<b>1,618</b>	<b>67,255</b>	<b>-41,456</b>	<b>1,34,075</b>	<b>15,771</b>
5. एलएएफ का चलनिधि प्रभाव	-1,30,020	25,390	86,330	18,795	75,785	-44,545	83,165	-7,410
6. ओएमओ *(निवल) का चलनिधि प्रभाव	43,159	32,869	3,540	2,787	1,550	2,772	50,910	23,181
7. एमएसएस का चलनिधि प्रभाव	65,187	4,117	-	16,036	2,420	317	-	-
8. सीआरआर परिवर्तन का प्रथम चरण प्रभाव	-	-	-	-36,000	-12,500	-	-	-
<b>इ. बैंक के रिजर्व # (ए + बी)</b>	<b>-66,784</b>	<b>17,863</b>	<b>23,085</b>	<b>56,673</b>	<b>-37,869</b>	<b>-14,475</b>	<b>21,478</b>	<b>89,311</b>

(+) : बैंकिंग प्रणाली में चलनिधि की आपूर्ति।

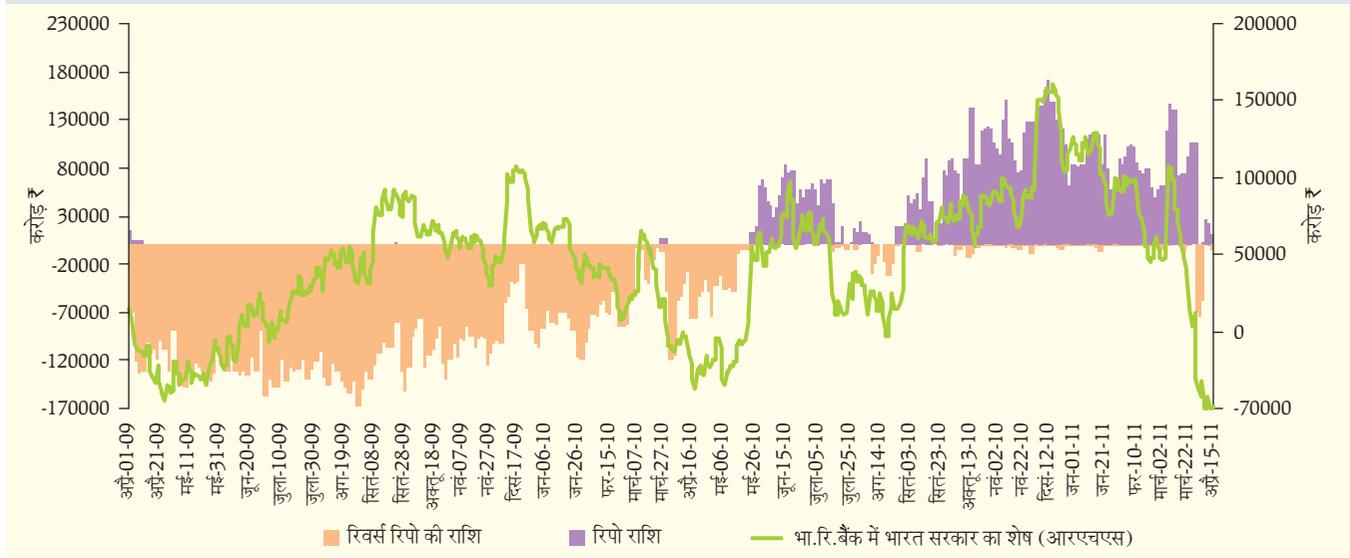
(-) : बैंकिंग प्रणाली से चलनिधि का अवशोषण।

\* : इसमें तेल बांड शामिल है किंतु राज्य सरकारों की ओर से सरकारी प्रतिभूतियों की खरीद शामिल नहीं है।

# : इसमें बैंकों के पास स्थित वॉल्ट केश शामिल है जिसकी सीआरआर के परिवर्तन के कारण प्रथम चरण चलनिधि प्रभाव के लिए समायोजित किया गया है।

टिप्पणी: आंकड़े का संबंध चौथी तिमाही के लिए 31 मार्च और अन्य सभी तिमाहियों के लिए अंतिम शुक्रवार से है।

चार्ट IV.1: एलएफएम मात्राएं और भारत सरकार का शेष



IV.6 अप्रैल 2011 के प्रथम सप्ताह के दौरान चलनिधि समायोजन सुविधा रिवर्स रिपो मोड में थी जो आंशिक रूप से सरकारी व्यय में वृद्धि दर्शाती है। किंतु 11 अप्रैल से यह घाटे के मोड में चली गयी।

IV.7 मौद्रिक अंतरण सामान्यतः अधिदेश चलनिधि की स्थिति की तुलना में कम चलनिधि की स्थिति में अधिक प्रभावी होता है। मौद्रिक नीति की परिचालनात्मक क्रियाविधि पर कार्य दल (अध्यक्ष: श्री दीपक मोहंती) ने सुझाया है कि कम चलनिधि की स्थिति के तहत मुद्रा बाजार दर नीतिगत आघातों का तुरंत प्रतिसाद देते हैं।

IV.8 चलनिधि को प्रभावित करने वाले प्रमुख स्वतंत्र कारक के रूप में उभर रहे व्यापक सरकारी अधिशेष के नकदी शेषों की हाल की घटनाएं सरकार द्वारा बेहतर नकदी प्रबंधन की आवश्यकता की ओर संकेत करती हैं (चार्ट IV.1)। इस संदर्भ में उक्त कार्य दल ने सुझाव दिया है कि सरकार के साथ चर्चा करके रिजर्व बैंक के विवेकाधीन सरकारी अधिदेश नकदी शेष की नीलामी की योजना बनायी जाए।

### ढांचागत प्रेरकों ने कड़ी चलनिधि की स्थिति के बीच नीतिगत संकेतों का प्रतिसाद दिया

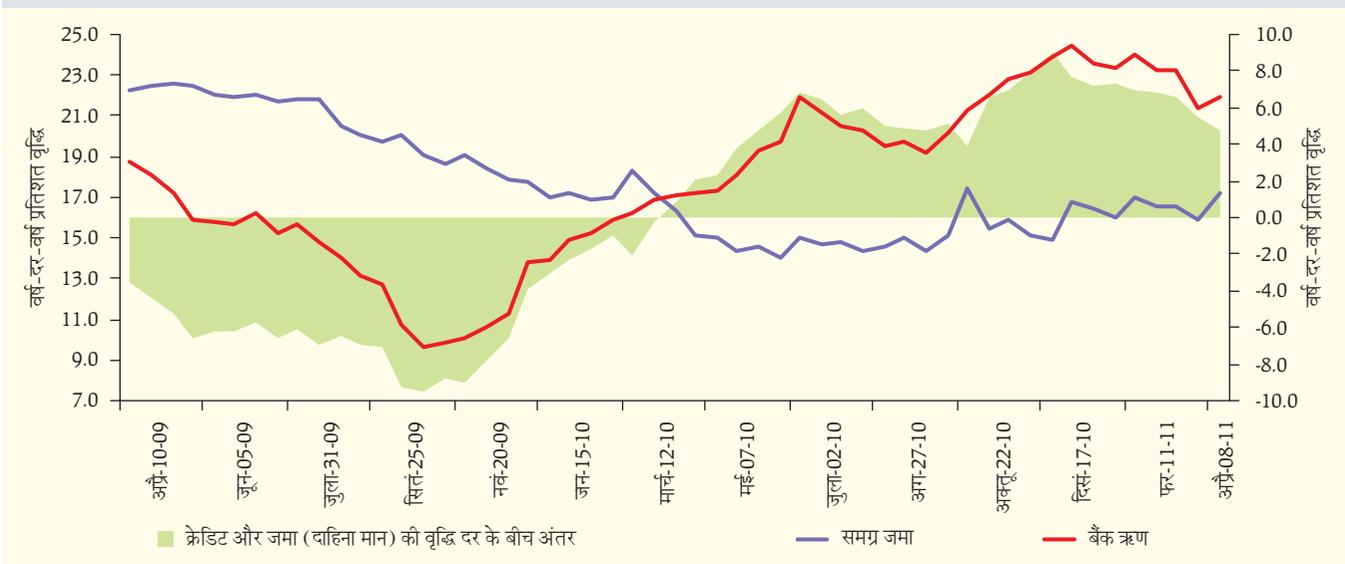
IV.9 मौद्रिक नीति का अंतरण मई 2010 तक कमजोर था जिसका कारण व्यापक अधिदेश चलनिधि का रुक जाना था

जो कि वैश्विक वित्तीय संकट के कारण बाजार में पहुंचायी जानी थी। रिजर्व बैंक द्वारा नीतिगत दरों को बढ़ा कर की गयी मुद्रास्फीति विरोधी नीतिगत कार्रवाई ने चलनिधि और मौद्रिक स्थिति को नीतिगत लक्ष्यों के अनुरूप रखने में मदद की। कम चलनिधि के वातावरण में यह अपेक्षित था कि उच्च जमाराशि दरों से जमाराशि-वृद्धि में सुधार होगा जबकि उच्च उधार दरों से ऋण की मांग में कमी आयेगी। 2010-11 की ति4 के दौरान मौद्रिक नीति का प्रभावी अंतरण बैंकों की उच्च जमाराशि और उनके उधार दरों में और जमाराशि प्रमाणपत्रों के माध्यम से एकमुश्त जमाराशि के उच्च निर्गम में देखा गया। इसके परिणामस्वरूप ऋण वृद्धि कम हो गयी जबकि जमाराशि वृद्धि बढ़ गयी जिससे ऋण और जमाराशि वृद्धि दरों के बीच अंतर कम हो गया (चार्ट IV.2)। चलनिधि की स्थिति में आया सुधार चलनिधि समायोजन सुविधा के तहत आपूर्ति में आयी गिरावट में दिखा।

### मुद्रा आपूर्ति वृद्धि सांकेतिक पथ से कम बनी रही

IV.10 2010-11 के दौरान आरक्षित मुद्रा वृद्धि मजबूत रहने के बावजूद मुद्रा आपूर्ति (एम<sub>3</sub>) वृद्धि 2010-11 के वार्षिक नीति वक्तव्य में निर्धारित सांकेतिक पथ से नीचे रही (सारणी IV.4)। इसका कारण कुल जमाराशि की कम वृद्धि और उच्च मुद्रा मांग से उभरे मुद्रा गुणक में गिरावट था।

चार्ट IV.2: समग्र जमा और बैंक ऋण



IV.11 मुद्रा आपूर्ति वृद्धि सामान्यतः कुल जमाराशि की प्रवृत्ति से प्रभावित होती है क्योंकि यह मुद्रा स्टॉक का 85 प्रतिशत से अधिक होती है। 2010-11 की पहली तीन तिमाहियों के दौरान उच्च स्फीतिकारी आशंकाओं की तुलना में जमाराशि में कुछ ही वृद्धि को देखते हुए मूल्य के स्टोर के रूप में सावधि जमाराशि तुलनात्मक रूप से अनाकर्षक लगीं। किंतु वर्ष के अंतिम वर्ष के दौरान जमाराशि दरों में

तेज वृद्धि से जमाराशि संग्रह की गति बढ़ गयी जिससे मुद्रा आपूर्ति वृद्धि में तेजी आने में सहायता मिली। तिमाही के दौरान जमाराशि ब्याज दरों में तेज वृद्धि और औद्योगिक गतिविधियों में गिरावट के साथ ही इक्विटी बाजार कम स्तरीय निष्पादन के परिणामस्वरूप कम ब्याज देने वाली मांग जमाराशियों की तुलना में अधिक लाभदायक मीयादी जमाराशियों को तरजीह दी गयी (चार्ट IV.3)।

सारणी IV.4: मौद्रिक संकेतक

(वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि प्रतिशत में)

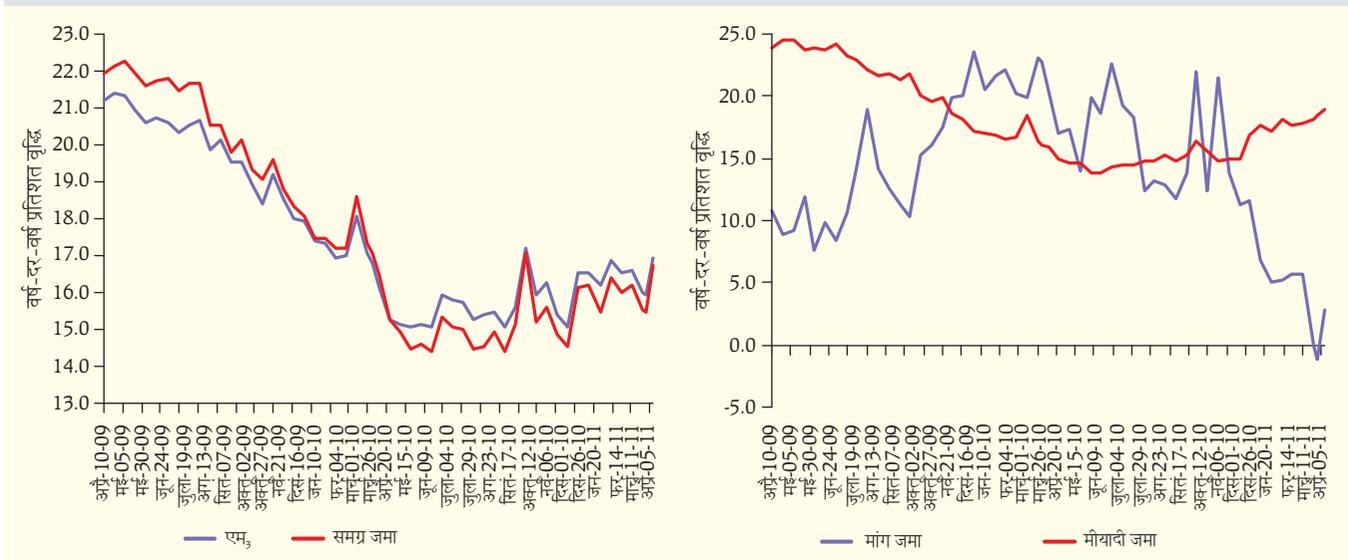
मद	2009-10	2010-11
1	2	3
व्यापक मुद्रा (एम <sub>3</sub> )	16.8	15.9
संकीर्ण मुद्रा (एम <sub>1</sub> )	18.2	9.6
एम <sub>3</sub> के प्रमुख घटक		
जनता के पास मुद्रा	15.3	19.1
समग्र जमा	17.2	15.4
जिसमें से: मांग जमा	22.0	-0.6
मीयादी जमा	16.4	18.2
एम <sub>3</sub> के प्रमुख स्रोत		
सरकार को निवल बैंक ऋण	30.7	18.2
वाणिज्यिक क्षेत्र को बैंक ऋण	15.8	20.6
बैंकिंग क्षेत्र की निवल विदेशी आस्तियां	-5.2	7.4
आरक्षित मुद्रा	17.0	19.1
सीआरआर परिवर्तनों के लिए समायोजित आरक्षित मुद्रा	13.0	18.2
अनुसूचित वाणिज्य बैंक		
खाद्येतर ऋण	17.1	21.2
समग्र जमा	17.2	15.8

टिप्पणी: 1. आंकड़े अनंतिम हैं।  
2. आंकड़े 31 मार्च के हैं किंतु अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के आंकड़े 2010-11 के लिए 25 मार्च के और 2009-10 के लिए 26 मार्च के हैं।

**मुद्रा की मजबूत मांग से चलनिधि और कम हो गयी और मुद्रा गुणक में गिरावट आयी**

IV.12 2010-11 के दौरान मुद्रा की मांग में तेज वृद्धि से चलनिधि की कमी और व्यापक मुद्रा की मंद वृद्धि में योगदान दिया। मुद्रा की मांग में वृद्धि जो कि सामान्यतः मुद्रा आपूर्ति वृद्धि से कम रहती है, में 2010-11 में तेजी आ गयी जो आंशिक रूप से मजबूत सकल देशी उत्पाद वृद्धि और उच्च मुद्रास्फीति की निरंतरता दिखाती है। 2010-11 के दौरान मुद्रा की मांग में वास्तविक लोच पूर्णता के करीब रही जो मुद्रास्फीति द्वारा मुद्रा की उच्च मांग के सृजन में निभायी गयी भूमिका दर्शाती है (चार्ट IV.4)। मुद्रा की मांग में वृद्धि और कुल जमाराशि वृद्धि में गिरावट से मुद्रा-जमाराशि अनुपात बढ़ गया जिससे मुद्रा गुणक में गिरावट आयी। परिणामस्वरूप मुद्रा वृद्धि के उच्च आधार के बावजूद, जिसका

चार्ट IV.3: मुद्रा और समग्र जमा



मुख्य कारण रिपो और खुले बाजार के परिचालनों के माध्यम से प्रारंभिक चलनिधि की आपूर्ति था, मुद्रा आपूर्ति वृद्धि सांकेतिक पथ से नीचे रही (चार्ट IV.5)।

**मुद्रा की आय गति में संकटोत्तर निम्न स्तर से सुधार हुआ**

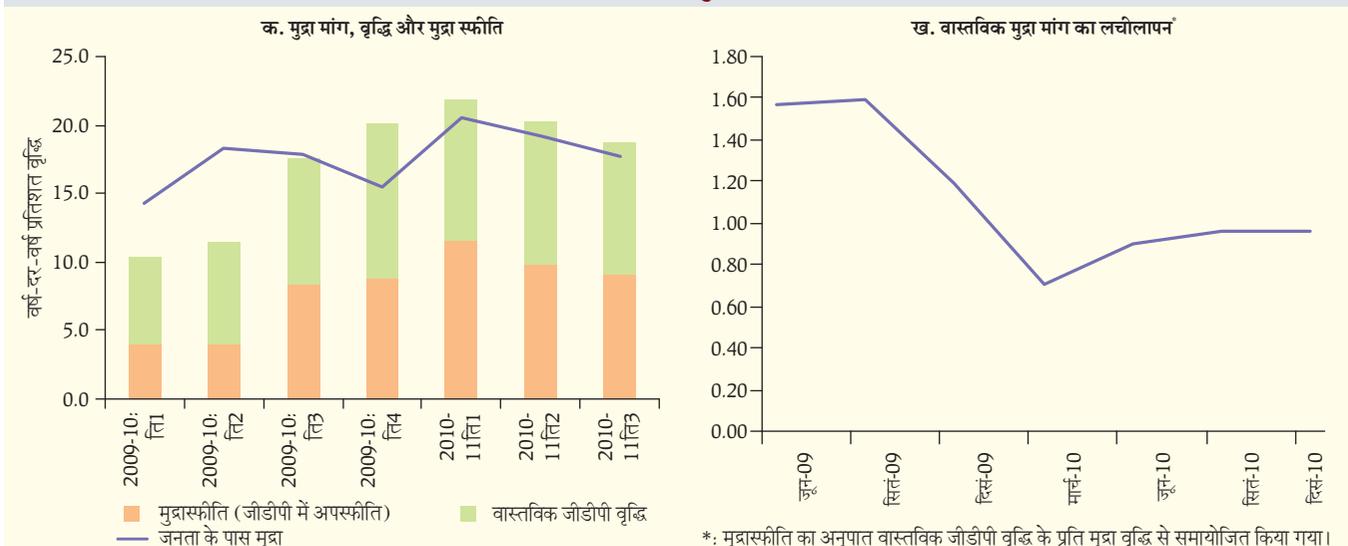
IV.13 2008-09 और 2009-10 के दौरान मुद्रा (एम<sub>3</sub>) की गति तेजी से कम हुई जो वित्तीय प्रणाली में वैश्विक संकट के पश्चात की अनिश्चितता दर्शाती है। वृद्धि और सामान्य वित्तीय

स्थिति में सुधार होने से मुद्रा की आय गति अपने दीर्घकालिक पथ पर लौट आयी जिसमें 2010-11 का शीर्ष स्तर भी शामिल है (चार्ट IV.6)।

**ऋण वृद्धि सांकेतिक स्तर से ऊपर बनी रही किंतु बाद में उसमें कमी आने लगी**

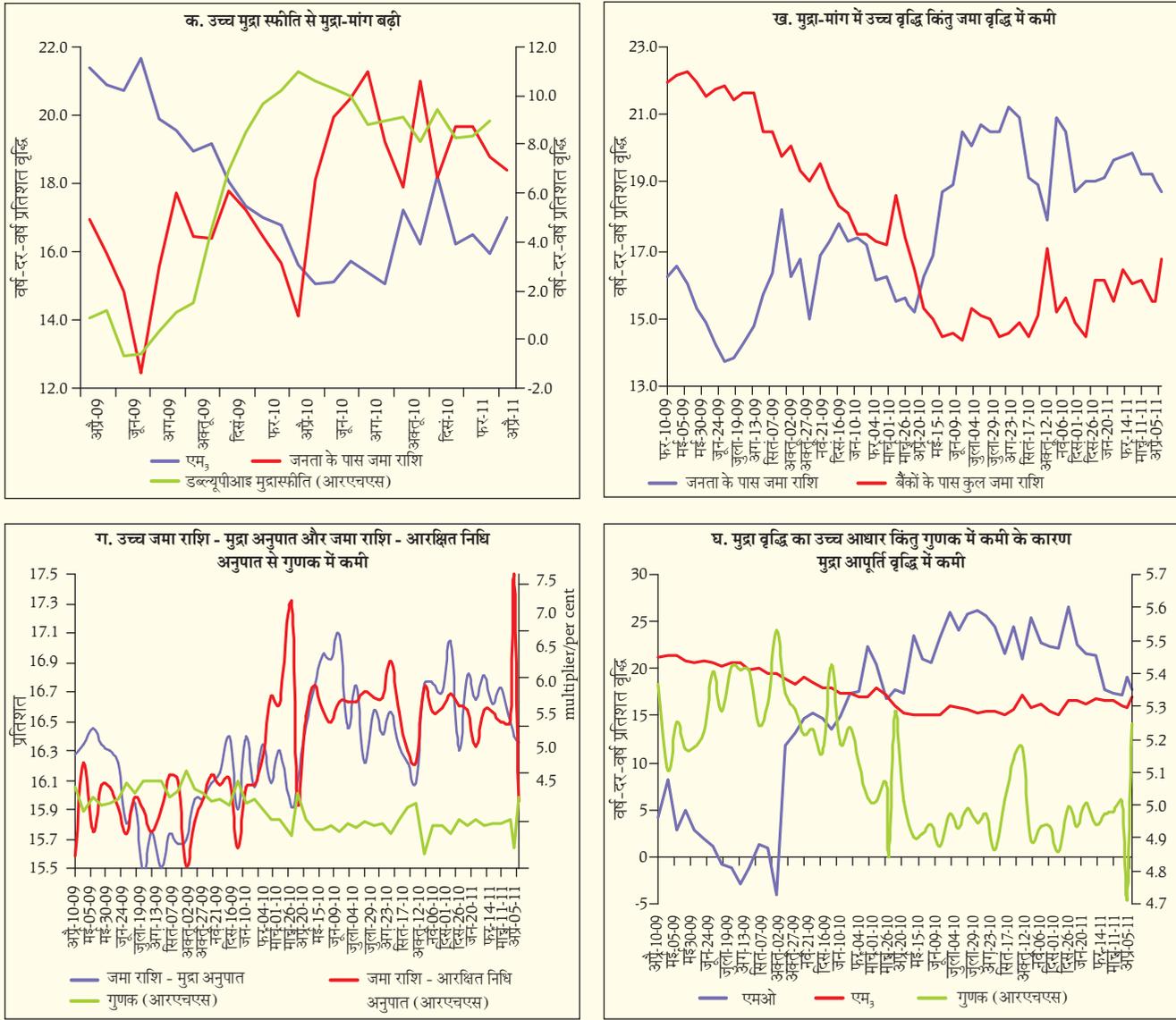
IV.14 ऋण वृद्धि सांकेतिक स्तर से ऊपर बनी रही किंतु हाल की अवधि में उसमें कुछ गिरावट देखी गयी। खाद्येतर ऋण वृद्धि में 20 प्रतिशत के सांकेतिक स्तर अधिक वृद्धि होने के बाद

चार्ट IV.4: मुद्रा मांग



\*: मुद्रास्फीति का अनुपात वास्तविक जीडीपी वृद्धि के प्रति मुद्रा वृद्धि से समायोजित किया गया।

चार्ट IV.5: मुद्रा गुणक में गिरावट से मुद्रा आपूर्ति वृद्धि में बाधा



2010-11 की ति4 से उसमें कुछ कमी आने लगी। उच्च ब्याज दरों के प्रतिसाद में खाद्येतर ऋण वृद्धि कम हो गयी और जमाराशि वृद्धि बढ़ गयी। इसके परिणामस्वरूप वृद्धिशील ऋण-जमाराशि अनुपात कम हो गया (चार्ट IV.7)।

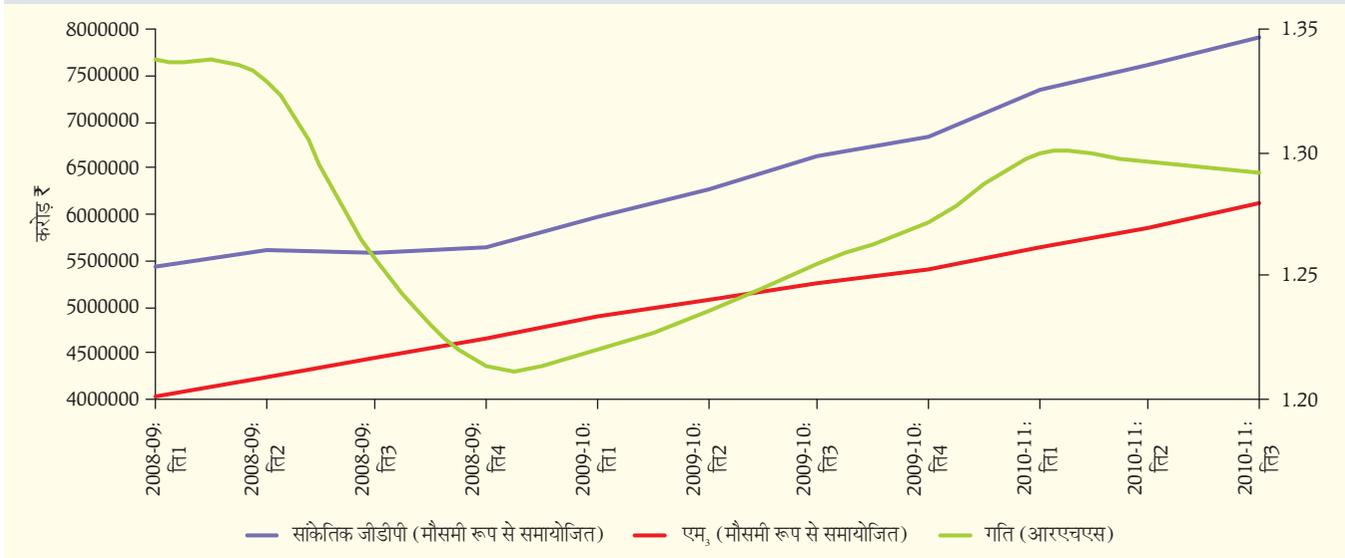
IV.15 ऋण वृद्धि में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर गिरावट विशेष रूप से सरकारी क्षेत्र के बैंकों के मामले में देखी गयी जबकि ऋण की स्थिति सामान्यतः आर्थिक गतिविधियों के अनुकूल थी (सारणी IV.5)।

IV.16 ऋण का क्षेत्रवार विनियोजन निरंतर व्यापक आधार का बना रहा जिसमें सेवाओं और व्यक्तिगत ऋण की ओर ऋण

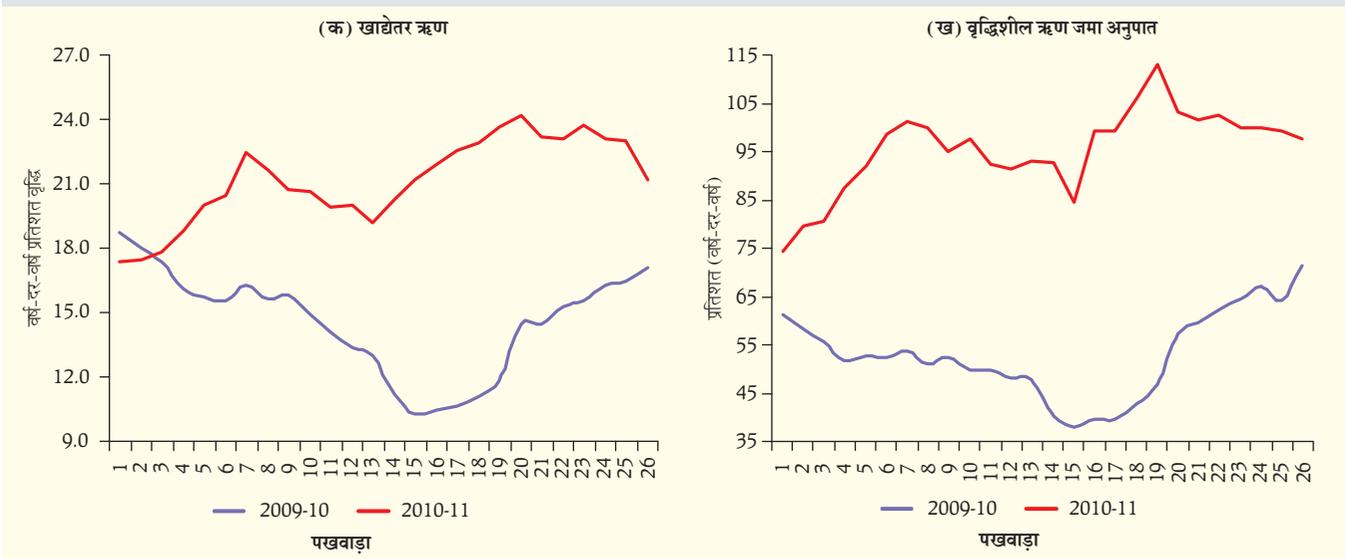
प्रवाह में काफी वृद्धि हुई थी (सारणी IV.6)। विभिन्न विश्लेषणों से पता चलता है कि औद्योगिक क्षेत्र को ऋण में बुनियादी सुविधाओं, धातु और धातु उत्पाद, वस्त्र, अभियांत्रिकी, खाद्य प्रसंस्करण और मोती तथा गहनों को ऋण प्रमुख थे। बुनियादी सुविधाओं को ऋण में उच्च वृद्धि विशेष रूप से उल्लेखनीय थी क्योंकि यह उच्च आधार पर है। गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को बैंक ऋण में तेज वृद्धि हुई।

IV.17 बैंक वाणिज्यिक क्षेत्र के लिए वित्त के मुख्य स्रोत बने रहे। 2010-11 के दौरान बैंकेतर स्रोतों से निधीयन पिछले वर्ष की तुलना में कम हो गया (सारणी IV.7)। निधीयन के

चार्ट IV.6: मुद्रा की गति की तिमाही प्रवृत्ति



चार्ट IV.7: ऋण संकेतक



सारणी IV.5: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों द्वारा प्रदत्त ऋण

(राशि करोड़ ₹ में)

मद	25 मार्च 2011 को बकाया	घट-बढ़ (वर्ष-दर-वर्ष)			
		26 मार्च 2010 को		25 मार्च 2011 को	
		राशि	प्रतिशत	राशि	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6
1. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	29,19,923	3,95,427	19.6	5,05,785	21.0
2. विदेशी बैंक	1,97,893	-2474	-1.5	31,032	18.6
3. निजी बैंक	7,28,029	61,212	11.7	1,43,325	24.5
4. सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंक*	39,38,659	4,69,240	16.9	6,93,870	21.4

टिप्पणी: 1. 25 मार्च 2011 के लिए आंकड़े अंतिम हैं।

2. \* आरआरबी सहित।

**सारणी IV.6: ऋण का क्षेत्रवार विनियोजन**

(प्रतिशत)

क्षेत्र	तिमाही-दर-तिमाही घटबढ़		तिमाही-दर-तिमाही घटबढ़	
	18 दिसंबर 2009 को तुलना में 26 मार्च 2010 को	17 दिसंबर 2010 को तुलना में 25 मार्च 2010 को	27 मार्च 2009 को तुलना में 26 मार्च 2010 को	26 मार्च 2010 को तुलना में 25 मार्च 2011 को
1	2	3	4	5
<b>खाद्येतर ऋण</b>	<b>10.4</b>	<b>8.1</b>	<b>16.8</b>	<b>20.6</b>
<b>कृषि और संबंधित कार्य</b>	<b>19.5</b>	<b>9.3</b>	<b>22.9</b>	<b>10.6</b>
<b>उद्योग</b>	<b>11.3</b>	<b>8.0</b>	<b>24.4</b>	<b>23.6</b>
जिनमें से इंफ्रास्ट्रक्चर	11.8	8.3	40.7	38.6
आधारभूत धातु और धातु उत्पाद	8.5	8.7	26.5	28.8
वस्त्र	9.0	11.1	18.2	19.2
अभियांत्रिकी	9.6	4.8	12.2	26.3
खाद्य प्रसंस्करण	18.0	15.0	22.1	29.3
रत्न और आभूषण	5.9	8.6	11.3	24.2
<b>सेवा</b>	<b>9.8</b>	<b>8.9</b>	<b>12.5</b>	<b>23.9</b>
जिसमें से पर्यटन, होटल, रेस्तरा	16.4	2.9	42.5	42.9
व्यावसायिक सेवा	2.6	7.1	-1.9	38.9
वाणिज्यिक स्थावर संपदा	5.2	6.1	-0.3	21.4
गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियां	10.2	22.9	14.8	54.8
<b>निजी ऋण</b>	<b>3.4</b>	<b>6.8</b>	<b>4.1</b>	<b>17.0</b>
जिनमें से उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	5.2	12.4	1.3	22.4
आवास	2.5	4.1	7.7	15.0
वाहन ऋण	7.6	5.4	2.9	24.3

**टिप्पणी:** सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंकों द्वारा दिये गये कुल खाद्येतर ऋण के 95 प्रतिशत हिस्से वाले चुनिंदा अनुसूचित वाणिज्य बैंकों से संग्रहित आंकड़ों पर आधारित। नवंबर 2010 से इन आंकड़ों को प्रति माह प्रसारित किया जा रहा है।

विदेशी स्रोतों के मामले में बाह्य वाणिज्यिक उधार/विदेशी मुद्रा परिवर्तनीय बांडों ने काफी वृद्धि दर्ज की जो आंशिक रूप से अधिकतर उन्नत देशों में कम ब्याज दर की स्थिति दर्शाती

है। विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में गिरावट बाह्य वाणिज्यिक उधार/विदेशी मुद्रा परिवर्तनीय बांडों में वृद्धि से काफी कुछ संतुलित हो गयी।

**सारणी IV.7: वाणिज्यिक क्षेत्र में वित्तीय संसाधनों का प्रवाह**

(₹ करोड़)

मद	अप्रैल-मार्च		
	2008-09	2009-10	2010-11
1	2	3	4
<b>अ. समायोजित खाद्येतर बैंक ऋण (एनएफसी)</b>	<b>4,21,921</b>	<b>4,78,614</b>	<b>7,06,949</b>
i) खाद्येतर ऋण	4,11,824	4,66,960	6,78,078
जिसमें से : पेट्रोलियम और उर्वरक ऋण	31,159	10,014	-24,236
ii) एफसीबी द्वारा गैर-एसएलआर निवेश	10,097	11,654	28,871
<b>ब. गैर बैंकों से ऋण प्रवाह (आ.1+आ.2)</b>	<b>4,51,399</b>	<b>6,04,303</b>	<b>5,09,432</b>
<b>आ.1 देशी स्रोत</b>	<b>2,58,132</b>	<b>3,80,733</b>	<b>3,08,619</b>
1. वित्तेतर संस्थाओं द्वारा सार्वजनिक निर्गम	14,205	31,956	28,520
2. वित्तेतर संस्थाओं द्वारा सकल निजी स्थानन	77,856	1,41,964	63,874 #
3. बैंक के इतर द्वारा अभिदान किए गए वाणिज्य पत्रों का निवल निर्गम	4,936	41,667	33,546 *
4. आवास वित्त कंपनियों से निवल ऋण	25,876	28,485	35,325 +
5. आरबीआई विनियमित 4 अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाओं-नाबार्ड, एनएचबी, सिडबी और एफिजम बैंक द्वारा प्रदत्त सकल सहायता	31,408	33,783	40,007
6. प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण जमाराशियां न लेने वाली एनबीएफसी (बैंक ऋण घटा कर)	42,277	60,663	71,267 +
7. एलआईसी का कारपोरेट ऋण, बुनियादी ढांचे तथा सामाजिक क्षेत्र में निवल निवेश	61,574	42,215	36,080
<b>आ.2 विदेशी स्रोत</b>	<b>1,93,267</b>	<b>2,23,570</b>	<b>2,00,813</b>
1. बाह्य वाणिज्यिक उधार/एफसीबी	30,948	15,674	59,545
2. एडीआर/जीडीआर निर्गम, बैंकों और वित्तीय संस्थाओं को छोड़कर	4,788	15,124	9,441
3. विदेश से अल्पवधि ऋण	-13,288	34,878	38,854 #
4. भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश	1,70,819	1,57,894	92,973 +
<b>इ. संसाधनों का कुल प्रवाह (अ+आ)</b>	<b>8,73,320</b>	<b>10,82,917</b>	<b>12,16,381</b>

**ज्ञापन:**

म्यूच्युअल फंडों द्वारा ऋण (गिल्ट से इतर) के माध्यम से

-32,168

96,578

-36,707

\*: 15 मार्च 2011 तक +: फरवरी 2011 तक #: अप्रैल-दिसंबर 2010

**टिप्पणी:** अप्रैल-फरवरी के आंकड़ों में अप्रैल-फरवरी की इक्विटी पूंजी और अप्रैल-दिसंबर के आंकड़ों में गैर निगमित निकायों की पुनर्निवेशित आय, अन्य पूंजी शामिल है।

### मौद्रिक नीति में उच्च मुद्रास्फीति से वृद्धि के प्रति जोखिम पर ध्यान देना होगा

IV.18 रिज़र्व बैंक की मुद्रास्फीति विरोधी नीति में ध्यान दिया गया है कि स्फीतिकारी आशंकाओं को नियंत्रित रखा जाए किंतु इससे समग्र वृद्धि प्रक्रिया में कोई बाधा न आए। कम चलनिधि की स्थिति से 2010-11 की ति4 में मौद्रिक अंतरण और मजबूत हो गया जैसा कि उच्च जमाराशि और उधार दरों से देखा जा सकता है जिससे चलनिधि पर ढांचागत दबाव कम होने

में मदद मिली। वृद्धि का संवेग अब तक बना हुआ है। किंतु नीतिगत दरों में 350 आधार अंकों की वृद्धि करने के बावजूद मुद्रास्फीति उच्च स्तर पर बनी हुई है। मुद्रास्फीति के निरंतर उच्च स्तर से वृद्धि के प्रति जोखिम मौद्रिक नीति को अल्पावधि संदर्भ में प्रभावित कर सकती है। चूंकि स्वयं उच्च मुद्रास्फीति वृद्धि को रोक सकती है, मौद्रिक नीति के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह दीर्घायु उच्च वृद्धि के लिए पूर्व-शर्त के रूप में कम मुद्रास्फीति की स्थिति सुनिश्चित करें।